प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विश्वविद्यालय में 21–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

पन्तनगर। 5 फरवरी 2025। विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में सस्य विज्ञान विभाग के संकाय उच्च अध्ययन केन्द्र में आज प्राकृतिक खेती से खाद्य एवं पोषण सुरक्षा पर 21–दिवसीय प्रशिक्षण का समापन समारोह सपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रशिक्षण समन्वयक डा. ओमवती वर्मा ने संकाय उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित 44वीं प्रशिक्षण को सफल बनाने हेतु समारोह में सभी उपस्थित अगुंतकों का स्वागत किया। संकाय उच्च अध्ययन केन्द्र के निदेशक एवं विभागाध्यक्ष डा. सुभाष चन्द्रा ने समापन भाषण देते हुए कहा कि इस उच्च अध्ययन केन्द्र की स्थापना 1994 में हुयी थी और इसके माध्यम से अब तक लगभग 800 से भी अधिक वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। डा. महेन्द्र सिंह पाल प्राध्यापक सस्य विज्ञान ने बताया कि वर्तमान युग में देश के कृषि सम्बन्धित समस्याओं को देखते हुये नई कृषि पद्धति की जरूरत है जिसमें प्राकृतिक कृषि एक अहम भूमिका अदा करती है। प्राकृतिक खेती, कृषि की एक ऐसी विधि है जो मानव स्वास्थ्य से लेकर किसानों की आय से सम्बन्धित सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता रखती है। यह हमारे समृद्ध पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है और स्थानीय रूप से उपलब्ध कृषि पद्धति पर आधारित है। इसलिए इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन कर वैज्ञानिकों को प्राकृतिक कृषि एवं उसको सम्पन करने हेतु निर्धारित तकनीकियों से वैज्ञानिकों को अवगत करना सार्थक है जिससे इस विधा का उचित प्रचार एवं प्रसार हो सके। डा. पाल ने प्रशिक्षण की विभिन्न विषयों पर आधारित रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान दिए गए व्याख्यानों को 90 प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षिणार्थियों ने उत्तम एवं अच्छा बताया और पिछले वर्षों के प्रशिक्षणों से तुलना करने पर यह प्रशिक्षण अधिक प्रभावी पाया गया। प्रशिक्षण में भाग लेने हेतु आये प्रशिक्षणार्थियों ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुये कहा कि इस प्रशिक्षण में दिये गये व्याख्यानों से उनको काफी हद तक नयी प्राकृतिक खेती की जानकारियां मिली, साथ ही सभी प्रशिक्षणार्थी, प्रशिक्षण के दौरान की गयी रहन–सहन की एवं खान–पान व्यवस्था से अत्यन्त सन्तुष्ट थे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. शिवेन्द्र कश्यप ने अपने विचार रखते हुए कहा कि प्राकृतिक कृषि भारतवर्ष की धरोहर है। प्राकृतिक खेती का आशय पद्धति, प्रथाओं और उपज में वृद्धि संबंधी प्राकृतिक विज्ञान से है ताकि कम साधनों में अधिक उत्पादन किया जा सके तथा इसके लिए प्राकृतिक कृषि को बढावा देने के लिए वैज्ञानिक को शोध की आवश्यकता है। इस प्रशिक्षण में पूरे भारतवर्ष से 14 कृषि वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया प्रशिक्षणोपरान्त उन्हे प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। अंत में डा. राजीव कुमार ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद किया और आभार व्यक्त किया। प्रशिक्षण के समापन समारोह में अधिष्ठाता छात्र कल्याण डा. एस.एस. जीना, निदेशक प्रशिक्षण एवं सेवायोजन डा. एम.एस. नेगी समस्त सस्य विज्ञान विभाग के संकाय सदस्य एवं महाविद्यालय के संकय सदस्य उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में जानकारी देते वैज्ञानिक।

निदेशक संचार